शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह- दिसंबर, 2021

सप्तम वर्ष, अंक -7

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: मध्याह्न भोजन से संबंधित आवश्यक व्यवस्थाएँ

राज्य में स्कूल अब पूरी क्षमता के साथ खुल गए हैं। हमें अत्यधिक सावधानी के साथ बच्चों का सीखना जारी रखना होगा। मध्याह्न भोजन को बनाने से लेकर वितरण तक हमें निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना होगा-

- महिला स्व-सहायता समूह से मध्याह्न भोजन निर्माण की पूरी टीम कोविड पोजिटिव नहीं हैं, यह अनिवार्यतः सुनिश्चित करना होगा। उनसे उनके एवं उनके परिवार के किसी सदस्य के कोरोना पोजिटिव नहीं होने की घोषणा ले लेनी चाहिए।
- रसोइये शाला प्रांगण में पूरे समय मास्क पहनकर रहें एवं शाला में प्रवेश करते ही अपने हाथ साबुन से सही तरीके से कम से कम चालीस सेकंड तक धोएं।
- शाला परिसर में थूकना एवं बहती नाक का होना बिलकुल भी नहीं होना चाहिए। विशेषकर जब वे खाना बनाने एवं वितरण की प्रक्रिया में शामिल हों।
- प्रतिदिन रसोई का काम प्रारंभ करने से पूर्व एवं बाद में अच्छे से सफाई होनी चाहिए। रसोई कक्ष में हवा के आने-जाने की पर्याप्त सुविधा होनी चाहिए।
- सभी बर्तन अच्छे से धोया जाना चाहिए और उन्हें पोछने हेतु साफ-सुथरा कपड़ा होना चाहिए। एक ही कपडे से बर्तन एवं फर्श साफ़ नहीं करना चाहिए।
- भोजन बनाने के लिए पुरानी सामग्री का उपयोग नहीं हो, इसकी जांच कर लेवें।
- सब्जी एवं फल आदि को ताजा ही खरीदें एवं उसे अधिक समय तक न रखें।
- सब्जियों को उपयोग में लाने के पूर्व नमक एवं हल्दी मिलाकर अच्छे से धोएं।
- भोजन ग्रहण करते समय दूरी का पालन करवाएं। स्थान की कमी होने पर भोजन रोटेशन में करवाएं। यदि शाला परिसर में लंबा हाल या बरामदा नहीं हो तो,भोजन अपने - अपने कक्षों में भी किया जा सकता है।
- बच्चों को भोजन पकते ही उसे परोसें, ताकि उन्हें गर्म भोजन मिल सके।
- सभी बच्चों को दूरी बनाकर कम से कम चालीस सेकंड तक सही तरीके से हाथ धोना चाहिए। खाली प्लास्टिक बोतल में लिक्विड साबुन भी रख सकते हैं।
- बच्चों के लिए साफ पीने के पानी की व्यवस्था ऐसी हो एवं दूरी का पालन हो।
- कचरा प्रबन्धन एवं उसका व्यवस्थित निपटारा करते हुए कचरे से इको-फ्रेंडली खाद आदि बनाने की प्रक्रिया का पालन किया जाए।

एजेंडा दो: राष्ट्रीय शिक्षा समागम का फोलो-अप

राज्य में जवाहरलाल नेहरू जी के जन्मदिवस के अवसर पर राष्ट्रीय शिक्षा समागम का आयोजन किया गया। जिसमें सत्ताईस राज्यों के पीएलसी प्रतिनिधि एवं हमारे राज्य के बहुत से नवाचारी शिक्षक शामिल हुए। इस समागम में हमारे प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी द्वारा किए गए प्रस्तुतीकरण में से निम्नलिखित को अपनाया जा सकता है-

- उत्तर प्रदेश के **श्री श्रीकांत पाठक** (8795704871) ने बच्चों की नियमित उपस्थिति हेतु "गुमशुदा की तलाश" कार्यक्रम लागू किया।
- बिहार के **श्री सिकन्दर कुमार** (9546746104) के द्वारा "whatsapp खोलो शिक्षा पाओ" ग्रुप बनाकर बच्चों एवं पालकों को सीखने के प्रति जिज्ञासा बढाते हुए सीखना सुनिश्चित किया गया।
- दादरा एवं नागर हवेली के **श्री प्रवीण गणेशराव लोखंडे** (9423901507) ने विद्यालय में माता-बालिका स्वास्थ मेला का आयोजन किया गया। जिसमे कन्याओ की आयु के अनुसार उनको स्वास्थ संबंधी विभिन्न जानकारियाँ प्रदान करने महिला डॉक्टर, शिक्षा विशेषज्ञ, आहार विशेषज्ञ, योग साधक, मनोपचारक, विभिन्न महिला अधिकारी, प्रेरणादायी महिला वक्ता, विभिन्न खेल की महिला खिलाडी, महिला उद्यमी, विभिन्न क्षेत्र की यशस्वी महिला आदि को सप्ताह मे एक दिन मेले के अवसर पर विद्यालय मे आमंत्रित किया जाता है।
- उत्तर प्रदेश के **श्री लईक अहमद** (8418980029) को गर्व है कि उनके उत्तर प्रदेश के जनपद जौनपुर का माधव पट्टी गाँव में मात्र दो सौ दस घरों में से आज देश के विभिन्न भागों में 47 IAS अधिकारी अपनी सेवाएं दे रहे हैं। यदि IPS एवं अन्य संवर्ग के अधिकारियों की गिनती करें तो यह संख्या बहुत अधिक बढ़ जाएगी। इसके लिए लंबा विजन आवश्यक है।
- झारखंड के **श्री सुरेन्द्र प्रसाद गुप्ता** (9835585594) ने सड़क पर विज्ञान सीखने के अवसर एवं अनुभव आधारित सीखने के अवसर दिलाने हेतु पहल की है जिसे अपना सकते हैं।
- गोवा से **श्री माधव शिंदे** (8788001752) ने विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को प्रारंभ से ध्यान देकर उन्हें रोजगारमूलक शिक्षा देते हुए उनके लिए उपयुक्त जॉब दिलवाने में सहयोग किया।
- उत्तराखंड से **सुश्री नमिता सुयाल** (9411374774) ने कोरोना लाकडाउन के दौरान बच्चों को सीखने में सहयोग देने हेतु घर घर जाकर वर्कशीट्स बनाकर उपलब्ध करवाया।
- पंजाब से **श्री संदीप शर्मा** (7888930421) ने पुस्तकालय में उपलब्ध अखबारों में से क्रास-वर्ड पजल निकालकर बच्चों को हल करने हेतु उपलब्ध करवाना शुरू किया।

- तमिलनाडू से **श्रीमती मलार** (7373477766) द्वारा आग्मेंटेड रियालिटी, गेमिफिकेशन एवं ब्लेंडेड लर्निंग अर्थात आफलाइन एवं आनलाइन दोनों माध्यम का उपयोग कर सिखाने का प्रयास किया ।
- हरियाणा के **स्वीटी शर्मा** (9812218415) ने "पढाई मतलब समझ" के माध्यम से बुनियादी शिक्षा पर फोकस कर एक साथ सीखने के सभी कौशलों पर ध्यान दिया।
- पंजाब के **श्री गुरमेल संधाल** (8283838322) द्वारा अपनी शाला में Bui lding as learning aid BA lA एवं शिक्षा पार्क का निर्माण कर सीखना रोचक एवं आकर्षक बनाया।
- राजस्थान के श्री चेना राम (9252920088) ने बच्चों को सरलता से हिन्दी सिखाने हेतु एक सरल सी पुस्तक "हिन्दी प्रभा" की रचना की है।
- बिहार के **डॉ गोपाल कृष्ण यादव** (9931331857) ने बच्चों को बाढ़ के दौरान सुरक्षित रहने हेतु तैयार किया है, क्योंकि उनके क्षेत्र में बाढ़ बहुत आती है और नुकसान होता रहता है।
- आंध्रप्रदेश के **श्री युलूगोंडा गंगाधर** (9676806532) ने विभिन्न पाठों को यू-ट्यूब में वीडियो बनाकर अपलोड किया है। जिससे बच्चों को पाठ पढ़ते समय वीडियो देखकर समझने में आसानी होती है,और मजा आता है।
- गुजरात के **श्री कपिल बुद्धिप्रसाद शुक्ला** (7575802569) अपनी शाला में बच्चों को स्वास्थ्य एवं साफ़-सफाई पर विशेष ध्यान रखते हुए अच्छी स्वस्थ आदतों का विकास करते हैं।
- बिहार के **श्री चंद्रशेखर प्रसाद साहू** (8092131203) द्वारा फेसबुक लाइव का उपयोग कर अपने विद्यार्थियों के लिए नियमित आनलाइन कक्षाओं का आयोजन किया गया।
- उत्तराखंड के **श्री अरविन्द कुमार** (9219866850) द्वारा आनन्दम पाठ्यचर्या का निर्माण कर बच्चों को सिखाना शुरू किया गया।
- हरियाणा के **श्री नरेंद्र बाल्यान** (7357702995) द्वारा ICT too ls (such as Zoom C louds, Goog le Meet, Microsoft Teams, WhatsApp Ca l ls, Conference Ca l ls, etc l) का उपयोग सीखकर अन्य शिक्षक साथियों को भी सिखाया| वे Text, PDF, Docs, Exce l, PPT, Video form में शिक्षण सामग्री तैयार कर विद्यार्थियों को भेजते हैं।
- उत्तर प्रदेश के **श्री विजय बहादुर विश्वकर्मा** (9839508783) द्वारा मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता जांचने की जिम्मेदारी विद्यालय के बाल संसद को देते हुए नियमित परीक्षण करवाया जाता है।
- उत्तरप्रदेश के **श्री मोहनलाल सुमन** (7398256360) द्वारा " कौन बनेगा लाकडाउन जीनियस " में अपने बेटियों के साथ मिलकर प्रतिदिन तीस प्रश्नों को पूछने फेसबुक पर डेढ़ से दो घंटे लाइव शो किया गया, जो लगातार 222 दिनों तक चला।

- राजनांदगाँव की **प्रीति शर्मा** (7489172430) द्वारा महिलाओं को स्कूल से जोड़ने एवं आत्मनिर्भर बनाने मशरूम की खेती करना सिखाया गया।
- कोरबा के **श्री अशोक कुमार राठिया** (7000809377) द्वारा स्कूली बच्चों के सहयोग से मासिक बाल पत्रिका "बाल भूमि" का प्रकाशन किया जाता है।
- महासमुंद के **श्री प्रेमचन्द साव** (8720030700) द्वारा बच्चों के लिए बचत बैंक प्रारंभ कर बचत की प्रवृत्ति विकसित की जा रही है।
- बालोद के शिक्षक **श्री टूमनलाल सिन्हा** (8871661223)जी के द्वारा बच्चों को मिट्टी एवं गोबर से सीड-बाल निर्माण की प्रक्रिया समझाते हुए हजारों की संख्या में सीड बाल निर्माण कराया गया। जिसे हमारे राज्य के शिक्षकों ने अन्य राज्यों के शिक्षकों को भेंट कर उनसे संबंध स्थापित किया। सीड-बाल एक्सचेंज के साथ ही वे समय- समय पर अपने अन्य राज्य के शिक्षकों से उगाए गए पौधे का हाल-चाल जानने के साथ-साथ उनके राज्य में शिक्षा में चल रहे योजनाओं की जानकारी लेकर बेहतर योजनाओं के बारे में हमारे राज्य को भी सूचित करेंगे।
- बिलासपुर के **श्री विद्यानंद कामड़े** (8109039207) द्वारा कक्षा में उपयोग करने हेतु एक स्लाइड प्रोजेक्टर बनाया है। जिसका विवरण आप उनसे स्वयं पूछ सकते हैं।
- दंतेवाडा की **श्रीमती टी । विजयलक्ष्मी** (9424283807) द्वारा बच्चों की टोली के माध्यम से धूम्रपान निषेध पर जागरूकता फैलाने का सुन्दर और सामाजिक प्रयास किया।
- शक्ति जिले के **श्री संजीव सूर्यवंशी** (9669368870) ने सबसे विस्तारित प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाते हुए अपने पीएलसी में 28 राज्यों एवं 8 केंद्र-शासित प्रदेशों के शिक्षकों को जोड़ा है,और समय समय पर विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन करते रहते हैं।
- कोरबा की **श्रीमती नीतिका जैकब** (9893604723) ने बाल संसद में एक सैनिटाईजर मंत्री भी बनाया है जो कोरोना संक्रमण रोकने हेतु सदैव जागरूक रहते हैं।
- रायपुर के **श्री नारायण प्रसाद देवांगन** (9827691704) द्वारा यूट्यूब चैनल के माध्यम से नवोदय कोचिंग का आयोजन किया गया। जिसके माध्यम से न केवल अपने राज्य वरन बाहर के कई राज्यों के बच्चों को इस चैनल का लाभ मिला और बहुतों का नवोदय में चयन भी हुआ।
- कोरिया के **श्री बिसे लाल** (7697556968) खिलौनों के माध्यम से बच्चों को खेल खेल में सीखने का अवसर देते हैं और भयमुक्त वातावरण मे सिखाते हैं।
- सरगुजा की **ललिता गुप्ता** (9977358884) स्कूल में म्यूजियम के माध्यम से बच्चों को पुरातन संस्कृति से अवगत करती व सिखाती हैं,और पुरानी चीजों का संग्रहण करती हैं।
- नारायणपुर के **श्री देवेन्द्र देवांगन** (7646863767) बच्चों में आत्मविश्वास बढाने उनसे "दो मिनट का भाषण " का आयोजन करवाते हैं।

एजेंडा तीन: ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल

जब कोई स्कूल अन्य स्कूलों के साथ नेटवर्क स्थापित कर एक दूसरे से सीखने, सहयोग कर कुछ बेहतर करने का प्रयास करें तो इस प्रक्रिया को "स्कूलों में साझेदारी या Twinning of Schools" कहते हैं। इस प्रकार की साझेदारी विभिन्न क्षेत्रों में हो सकती है, जैसे –

- कुछ स्कूलों के समूह आपस में नेटवर्क बनाकर एक दूसरे की मदद करें।
- एक स्कूल के शिक्षक दूसरे स्कूल के शिक्षकों के यहाँ आना-जाना करें, सीखें, सहयोग करें।
- एक दूसरे के स्कूल में उपलब्ध संसाधनों का साझा या मिलकर उपयोग करें।
- किसी एक परियोजना में दो या अधिक स्कूल मिलकर काम करें।
- कोई स्कूल अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में अन्य स्कूलों को मेंटर कर उनका विकास करें।
- साझेदार स्कूल के बच्चे एक दूसरे के यहाँ आना-जाना करें।
- एक दूसरे की शालाओं के बच्चों का उपलब्धि परीक्षण या आकलन की जिम्मेदारी लेवें।

स्कूलों में साझेदारी निम्नलिखित प्रकार से की जा सकती है-

- क्षमता विकास हेतु ट्विनिंग।
- सूचनाओं के आदान-प्रदान हेतु।
- तकनीकी सहयोग हेतु।
- किसी परियोजना को पूर्ण करने हेतु।
- ई-ट्विनिंग ।

किस प्रकार की शालाएं एक दूसरे से ट्विनिंग कर सकते हैं ?

- निजी शालाएं अपने अलग-अलग कक्षाओं को अलग -अलग गाँव के स्कूलों के बच्चों के साथ,ताकि वे एक दूसरे के पास उपलब्ध संसाधनों को देखकर, अनुभव कर सीख सकें।
- हायर सेकेण्डरी शालाएं अपने आसपास के उच्च प्राथमिक एवं प्राथमिक शालाओं के बच्चों के साथ, ताकि उन्हें पढने एवं आगे अध्ययन के लिए प्रेरित किया जा सके।
- किसी क्षेत्र में बेहतर प्रयास एवं कार्य कर रहे स्कूलों में जाकर अन्य स्कूल के शिक्षक एवं बच्चे उस मॉडल को देखकर अपने यहाँ लागू करने की प्रेरणा लेकर वापस आने हेतु।
- किसी एक शाला में उपलब्ध संसाधनों को अन्य शाला के शिक्षक भी उपयोग कर सकें, ऐसा अवसर उपलब्ध कराने के दृष्टिकोण से ट्विनिंग।
- शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान एवं अन्य तकनीकी उच्च शिक्षण संस्थान अपने आसपास के कक्षा दसवीं से बारहवीं तक के बच्चों को अपने यहाँ आमंत्रित कर उन्हें उच्च शिक्षा में अपने यहाँ आने हेतु तैयारी करने के लिए प्रेरित करने हेतु।

- राष्ट्रीय या राज्य स्तर पर प्रशिक्षण प्राप्त किसी स्रोत व्यक्ति व्दारा अपने आसपास के स्कूलों के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था जैसे सीसीआरटी से कठपुतली पर प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक अन्य शाला में बच्चों के लिए भी कठपुतली कला सिखाने बाबत।
- एक दूसरी शालाओं के SMCs के सदस्य भी आपस में ट्विनिंग कर सकते हैं।

ट्विनिंग हेतु कार्य प्रारंभ करने हेतु प्रक्रिया-

- समान रूचि एवं निकट की शालाएं आपस में जोड़ी बनाएं ।
- किसी एक आइडिया पर एकमत हों जिस पर मिलकर काम कर सकें।
- इस बात के लिए स्वीकृति दें कि आप चयनित कार्य के लिए संकल्पित हैं।
- स्कूल से स्टाफ का चयन करें जो इस कार्य को आगे बढाने हेतु नेतृत्व प्रदान कर सके।
- ट्विनिंग के लिए आवश्यक संसाधन की पहचान करें एवं जुटाएं।
- यात्रा की दूरी के अनुसार शाला का चयन एवं तैयारी करें।
- ट्विनिंग के लिए पूरी योजना बनाकर साझा कर सहमति लें एवं दें।
- ट्विनिंग संबंधित कार्ययोजना का क्रियान्वयन करना प्रारंभ करें।
- समय - समय पर पूरे कार्यक्रम का फीडबैक अवश्य लेवें।
- पूरे कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण तैयार रखें,ताकि अनुभव को साझा किया जा सके।

सफलतापूर्वक ट्विनिंग हेतु आवश्यक विशेषताएं –

- दोनों साझेदारों के बीच win-win स्थिति की होनी चाहिए।
- दोनों साझेदार ट्विनिंग के क्षेत्र के लिए सहमत एवं एकमत होनें चाहिए।
- दोनों की आवश्यकतायें वास्तविक मांग पर आधारित होनी चाहिए।
- स्पष्ट एवं फोकस दृष्टिकोण होना चाहिए एवं इस बाबत ठोस योजना होनी चाहिए।
- नेतृत्व क्षमता एवं कौशल होना चाहिए एवं आवश्यक संसाधन हेतु पर्याप्त बजट सुलभ होना चाहिए।
- एक दूसरे का सम्मान, कल्चर की समझ एवं सतत संवाद या कम्युनिकेशन होना चाहिए।

आप सभी अपने अपने शाला संकुल में आपस में मिल- बैठकर एक दूसरे के स्कूल से आइडिया लेकर काम करने स्कूलों की जोड़ी बनाकर आपस में इस ट्विनिंग प्रक्रिया को शीघ्र प्रारंभ करें। शत-प्रतिशत शालाओं में आपस में जोड़ी बनाकर ट्विनिंग प्रारंभ करें । इस संबंध में आपसे शीघ्र जानकारी संकलित की जाएगी। शाला संकुल प्राचार्य इस पूरी योजना के क्रियान्वयन हेतु जिम्मेदार होंगे एवं सभी स्कूलों की जानकारी मय आइडिया/ संसाधन साझा करने के क्षेत्र की जानकारी नियमित रूप से अपडेट रखेंगे। अच्छे उदाहरण हमें सीधे भेजें।

एजेंडा चार: प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से मेंटरिंग

राज्य में विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के जमीनी स्तर पर सफल क्रियान्वयन हेतु जिले एवं विकासखंड स्तर पर निम्नलिखित दस योजनाओं/ कार्यक्रमों के लिए तत्काल एक योग्य, कुशल एवं तकनीकी रूप से विशेषज्ञ मेहनती शिक्षक का चयन मेंटर के रूप में करें जो अपनी शाला में अपने मूल कार्य को संपादित करते हुए उनको सौंपे गए अतिरिक्त कार्य को भी सफलतापूर्वक संपादित कर सके-

अंगना म शिक्षा	खिलौनों के माध्यम से सीखना	अभ्यास पुस्तिकाओं पर कार्य-प्राथमिक
सौ दिन सौ कहानियाँ	प्रारंभिक भाषाई दक्षताएं / गढ़बो नवा भविष्य	अभ्यास पुस्तिकाओं पर कार्य-उच्च प्राथमिक
प्रारंभिक गणितीय दक्षताएं/गणित किट	कक्षा में नियमित प्रयोगों के माध्यम से सीखना	पूर्व व्यवसायिक शिक्षा
अभ्यास पुस्तिकाओं पर कार्य-हाई/हायर सेकन्डरी		

इनमें से कुछ योजनाओं पर पूर्व से ही कुछ शिक्षक कार्य कर रहे हैं। यदि उनका प्रदर्शन अच्छा है तो उन्हें ही इस कार्य हेतु जारी रखा जा सकता है। इस प्रकार जिला एवं विकासखंड स्तरीय चयनित मेंटर्स से मुख्यतः निम्नलिखित अपेक्षाएं होंगी-

- अपने अपने क्षेत्र में टेलीग्राम ग्रुप में सभी शिक्षकों को जोड़ने के लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में पहल करेंगे एवं उन्हें समग्र शिक्षा के चैनल से भी जोड़ेंगे।
- आपसे संबंधित कार्य को अपने-अपने क्षेत्र में सभी संबंधित शिक्षकों से समय पर करवाया जाना सुनिश्चित करेंगे।
- जिले में अन्य शिक्षक साथियों को पूर्ण मार्गदर्शन देंगे एवं उन्हें निर्धारित कार्य को बेहतर गुणवत्ता के साथ संपन्न करने में आवश्यक समर्थन प्रदान करेंगे।
- अपने-अपने क्षेत्र की प्रत्येक प्राथमिक से लेकर उच्च प्राथमिक तक की शालाओं में विद्यार्थी विकास सूचकांक लगाकर अपने-अपने कार्य की मासिक प्रगति की ट्रेकिंग के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं एवं मार्गदर्शन देंगे।
- जिले एवं विकासखंड स्तर के मेंटर्स आपस में नियमित रूप से प्रतिमाह कम से कम एक बार मिलेंगे एवं सोशियल मीडिया से नियमित संपर्क में रहेंगे।

- आपकी सक्रियता से आपके क्षेत्र में आपको प्रदत्त कार्यक्रम के क्रियान्वयन में आपका प्रभाव दिखना चाहिए।
- वे नोडल अधिकारी/ मेंटर्स सफल माने जाएंगे जो अपने जिले में अपने कार्यक्रम के शत-प्रतिशत क्रियान्वयन की घोषणा सबसे पहले कर सकें।
- उपरोक्त कार्य आपको अपनी शाला में रहते हुए अपने नियमित कार्यों के साथ किया जाना है। इस हेतु आप अपने जिले/ विकासखंड से आवश्यक सहयोग लेवें।

दस जिम्मेदारियों में आपको निम्नलिखित लक्ष्यों को ध्यान में रखकर कार्य करना होगा-

अंगना म शिक्षा- आंगनबाडी से लेकर प्राथमिक शालाओं में छोटी कक्षाओं के बच्चों विशेषकर कक्षा तीन तक के बच्चों को उनकी माताओं के माध्यम से घर पर सिखाने, माताओं के साथ विभिन्न गतिविधियों जैसे मेलों आदि का आयोजन, अधिक से अधिक माताओं को बच्चों को लगातार सिखाने की मॉनिटरिंग के साथ - साथ उन्हें आवश्यक सहयोग भी देवें। इस कार्य से संबंधित डाटा भी नियमित एकत्र करते रहें|

खिलौनों के माध्यम से सीखना- बच्चों को खिलौनों के माध्यम से सिखाने हेतु शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के खिलौने बनाकर उनका कक्षा में उपयोग हेतु प्रेरित करेंगे। अपने क्षेत्र में **खिलौना बैंक** बनाकर अधिक से अधिक नवाचारी एवं सीखने में उपयोगी खिलौने बनाकर एक- दूसरे के साथ साझा कर एक-दूसरे को सिखाने हेतु आवश्यक माहौल बनाएंगे।

अभ्यास पुस्तिकाओं पर कार्य (प्राथमिक से हायर सेकन्डरी)- विभिन्न स्तर एवं कक्षावार अभ्यास पुस्तिकाओं की सूची प्राप्त कर सभी कक्षाओं/ सभी शालाओं एवं सभी बच्चों को उसका वितरण एवं प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा उन पर लगातार कार्य करना, शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के कार्यों की जांच कर उन्हें सुधार हेतु फीडबैक देना और इन अभ्यास पुस्तिकाओं के माध्यम से बच्चों की उपलब्धि में सुधार हेतु सभी आवश्यक प्रयास अपने-अपने क्षेत्र में किया जाएं। बच्चों द्वारा अभ्यास पुस्तिकाओं पर कार्य घर पर रहकर करवाया जाए और प्रति सप्ताह उन्हें कुछ लक्ष्य देकर उनके कार्यों का आकलन किया जाए।

सौ दिन सौ कहानियाँ- उच्च प्राथमिक स्तर पर पुस्तकालय में उपलब्ध इन कहानियों को प्रतिदिन बच्चों को एक-एक कहानी पढकर समझने, उनपर आधारित प्रश्नों एक जवाब देने, बच्चों के पढने की गति एवं समझ आदि का टेस्ट करवाकर लगातार उनमें सुधार करने की दिशा में कार्य किया जाए। इन पुस्तकों को प्राथमिक स्तर के बच्चों को भी पढ़कर सुनाने का अवसर दिया जाए।

प्रारंभिक भाषाई दक्षताएं/ गढ़बो नवा भविष्य- निपुण भारत में प्रस्तावित दक्षताओं का अच्छे से अध्ययन कर उन पर विभिन्न स्तरों में संगोष्ठी का आयोजन कर बच्चों में भाषाई कौशल विकास की दिशा में ठोस कार्य करते हुए सभी बच्चों को उनके कक्षा के स्तर के अनुरूप समझ के साथ पढ़ना आ जाए, इसका ध्यान रखना होगा। गढ़बो नवा भविष्य पुस्तक का अध्ययन कर सभी बच्चों को अधिक से अधिक व्यवसायों के नामों की जानकारी देनी होगी।

प्रारंभिक गणितीय दक्षताएं/गणित किट- बच्चों को गणित विषय से भय दूर कर उन्हें गणित की मूलभूत अवधारणाओं में समझ बनाने की दिशा में ठोस योजना बनाकर कार्य किया जाए। गणित के विभिन्न अवधारणाओं की स्पष्ट समझ बनाने,विभिन्न सामग्रियों का अध्ययन कर उन पर शिक्षकों का क्षमता विकास हेतु वेबीनारों के माध्यम से आवश्यक जानकारी दी जाए। गणित किट का उपयोग एवं स्थानीय संसाधनों से सभी शालाओं में गणित के लिए सहायक सामग्री भी तैयार की जाए।

कक्षा में नियमित प्रयोगों के माध्यम से सीखना- सभी कक्षाओं में बच्चों को विभिन्न विषयों में छोटे छोटे, अपने आसपास उपलब्ध सामग्री आदि से, बच्चों के छोटे छोटे समूह के माध्यम से विभिन्न प्रयोगों एवं प्रोजेक्ट कार्य आदि को संपन्न करने हेतु अवसर दिया जाए। प्रत्येक बच्चे को कम से कम दस विज्ञान के प्रयोग स्वयं करते हुए उन्हें अच्छे से समझा सकने का कौशल विकसित किया जाए। शिक्षक एक-दूसरे से विभिन्न विषयों के प्रयोगों को स्वयं करते हुए, एक- दूसरे को सिखाने एवं साझा करने हेतु वीडियो बनाकर सोशियल मीडिया के माध्यम से साझा करें। इसी प्रकार बच्चों द्वारा विज्ञान के प्रयोगों के प्रदर्शन के वीडियो बनाकर साझा करें। अपने क्षेत्र के अटल टिंकरिंग लैब को सक्रिय करें एवं उनका नियमित उपयोग आसपास की शालाएं भी करें।

पूर्व व्यवसायिक शिक्षा- उच्च प्राथमिक शालाओं में बस्ताविहीन-स्कूल का उपयोग अवकाश के दिनों में किये जाने हेतु स्थानीय कुशल कलाकारों की सेवाएं प्राप्त की जाएं। बच्चों के लिए उपयोगी एवं कुछ अलग हटकर कौशल सिखाने की व्यवस्था करवाते हुए सीखे हुए कौशल का प्रदर्शन अपने समुदाय के समक्ष करने हेतु मेलों का आयोजन के साथ-साथ आसपास से विभिन्न विशेषज्ञों से अतिथि व्याख्यान आदि करवाए जाने की व्यवस्था करें।

एजेंडा पांच: उपचारात्मक शिक्षण

कक्षा में नियमित अध्यापन के दौरान उपचारात्मक शिक्षण हेतु तीन एप्रोच का इस्तेमाल किया जा सकता है-

अतिरिक्त समय (More time)- वैसे उपचारात्मक शिक्षण नियमित शाला अवधि में ही अध्यापन के हिस्से के रूप में आयोजित किया जाना चाहिए,परन्तु कोरोना से हुई क्षति को ध्यान में रखते हुए इसके लिए शाला अवधि के पूर्व एवं पश्चात, अवकाश के दिनों में अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन करते हुए कुछ हद तक क्षतिपूर्ति का प्रयास किया जा सकता है।

समर्पित ध्यान (Dedicated attention)- उपचारात्मक शिक्षण में फोकस होकर ध्यान देने, छोटे-छोटे ग्रुप में शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात कम से कम रखते हुए विद्यार्थियों को एक- दूसरे से सीखने (peer tutoring) के अधिक से अधिक अवसर देना चाहिए।

सीमित सामग्री (Compressed Content)- चयनित सामग्री का अध्यापन, ऑनलाइन, आफलाइन दोनों अर्थात ब्लेंडेड माध्यम का अध्यापन में उपयोग एवं कोर्स को पूरा करने की दौड़ के बदले फोकस दक्षताओं पर फोकस कर कार्य किया जाना चाहिए।

लाकडाउन की वजह से आपके विद्यार्थी वर्तमान कक्षा के लिए निर्धारित दक्षताओं से कितनी कक्षा पीछे हैं। उसका आकलन कर उन्हें उनकी कक्षा अनुरूप दक्षताओं को हासिल करने हेतु आपको सुनियोजित योजना बनाकर कार्य करना होगा।

एजेंडा छह: अंगना म शिक्षा 2.0

राज्य की महिला शिक्षिकाएं पुनः अंगना म शिक्षा 2.0 प्रारंभ करने जा रही हैं। जिसमें वे जिले से लेकर विकासखंड स्तर तक कुशल महिला शिक्षिकाओं का चिह्नांकन कर उन्हें प्रथम के सहयोग से प्रशिक्षित करेंगी। इस बार स्थानीय स्तर पर मेलों का आयोजन कर बच्चों के साथ की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों का प्रदर्शन किया जाएगा। मेले में बच्चे अपनी माताओं के साथ उपस्थित होकर सक्रिय सहभागिता लेते हुए बच्चों को घर पर कैसे सीखने का अवसर देना है। इसका अवलोकन व स्वयं अभ्यास करके देखेंगे कि बच्चे विभिन्न गतिविधियों के आयोजन से कैसे सीख रहे हैं। माताएं बच्चों द्वारा सीखने के आधार पर एक सपोर्ट कार्ड में उनके सीखने की स्थिति का विवरण लिखते हुए स्वयं के हस्ताक्षर से कक्षा शिक्षक को सौपेंगी। जिसका तात्पर्य यह होगा कि उन्होंने घर पर रहकर बच्चों को इतनी दक्षताएं सिखा दी है। इस बार प्रत्येक समुदाय से एक सक्रिय माता को स्मार्ट माता के रूप में चिह्नांकन किया जाएगा और उन्हें अन्य माताओं को सक्रिय रखने की जिम्मेदारी दी जाएगी।

प्राथमिक कक्षाओं में पढने वाले बच्चों की माताओं को एक अभियान चलाकर सक्रिय करते हुए उन्हें "अंगना म शिक्षा" कार्यक्रम से अवश्य जोड़ें एवं उनके विवरण की प्रविष्टि करें।

एजेंडा सात: विद्यान्जली कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अंतर्गत शाला एवं समुदाय के बीच के संबंध को और प्रगाढ़ करने एवं बच्चों को अच्छी शिक्षा देने हेतु समुदाय का सहयोग लेने हेतु समुदाय स्कूल को निम्नलिखित तरीकों से सहयोग प्रदान कर सकता है-

- शाला में जाकर वहां बच्चों को सीखने में सहयोग करने हेतु आवश्यक पहल।
- शाला में आवश्यकताओं का आकलन कर आवश्यक संसाधन सुलभ करने हेतु सहयोग।

इस कार्य में समुदाय से कोई भी, शिक्षा में रूचि लेने वाले, युवा बेरोजगार, सेवानिवृत्त बुजुर्ग, महिलाएं, बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थी एवं उसी स्कूल से निकले पुराने विद्यार्थी, व्यवसाय से जुड़े साथी कोई भी सहयोग प्रदान कर सकता है।

एजेंडा आठ: ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस

वर्तमान में विभिन्न विभागों द्वारा उनके कार्यों को आसान करने अर्थात ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस पर फोकस कर कार्य किया जा रहा है। संकुल स्तर पर चर्चा करें कि आप सभी को मुख्यतः कौन- कौन से काम करने होते हैं। इन कार्यं को कैसे आसान किया जा सकता है। इस पर गहन मंथन कर कुछ सरल रास्ते खोजने का प्रयास करें। उन्हें लागू करते हुए हमसे भी साझा करें,ताकि हम आपके द्वारा अपनाए गए ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस को अन्य साथियों के साथ साझा कर सकें। कुछ क्षेत्र इस प्रकार हो सकते हैं- सभी को शाला में प्रवेश, नियमित उपस्थिति की ट्रेकिंग, शालाओं की मानिटरिंग कर सुधार, सीखना आसान करना, सिखाने के सरल तरीके, आकलन को आसानी से कर पाना, सक्रिय सामुदायिक सहयोग ले पाना... इत्यादि।

एजेंडा नौ: बाल-वाटिका हेतु तैयार लर्निंग आउटकम पर समझ हेतु चर्चा

NCERT द्वारा पांच छह आयु वर्ग के बच्चों के लिए कुल विशिष्ट लर्निंग आउटकम का निर्धारण किया गया है। इन लर्निंग आउटकम को मुख्यतः तीन लक्ष्यों के रूप में बांटा गया है-

- लक्ष्य एक- बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना।
- लक्ष्य दो- बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना।
- लक्ष्य तीन- बच्चों द्वारा सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ना।

प्रत्येक विकासात्मक लक्ष्य के लिए अलग-अलग लर्निंग आउटकम निर्धारित किए गए हैं, जिन्हें हमारे सभी बच्चों को शुरुआती वर्षों में ही प्राप्त कर लेना चाहिए। इन्हें आपको सोशियल मीडिया से भेजा गया है। इस पर चर्चा कर इसका क्रियान्वयन करें।

एजेंडा दस: सार्वजनिक वित्त प्रबन्धन प्रणाली (पीऍफ़एमएस) से विद्यालयीन खर्च

वित्तीय व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने एवं बीच में होने वाले धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार जैसे मामलों को रोकने हेतु Public Financial Management System (PFMS) का उपयोग किया जाता है। यह एक ऐसा सिस्टम है जो केवल एक क्लिक से यूजर्स जैसे हजारों स्कूल के बैंक एकाउंट में सीधे राज्य स्तरीय कार्यालय द्वारा राशि डालने हेतु सक्षम है।

इस योजना में किसी एक खाते को राज्य में नोडल बनाया जाता है और अन्य खातों को उससे संलग्न कर मैपिंग की जाती है। मैपिंग में आपके स्कूल के खाते का आपके संकुल, विकासखंड एवं जिले से लिंक करते हुए Agency Parent Account बनाया जाता है।

PFMS को लागू करने से निम्नलिखित लाभ होंगे –

- इसके आने से सरकारी धनराशि बिना किसी रुकावट के हितग्राही तक पहुंच जाती है।
- इसकी वजह से यूजर्स को सरकारी कार्यालयों के अनावश्यक चक्कर नहीं लगाने पड़ते।
- यह सिस्टम पूरी तरह से इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणाली है जो कम्प्युटर सोफ्टवेयर और इन्टरनेट पर आधारित है और पारदर्शिता से काम हो सकता है।
- अब बहुत तेजी से एक साथ लाखों यूजर्स के खातों में एक साथ पैसे भेजे जा सकते हैं
- इसके माध्यम से किसी भी रियल समय में व्यय की गयी राशि का विवरण पता चल सकता है। इसके साथ ही पेपर वर्क से छुटकारा मिल जाता है।

यह काफी आसान सा प्रोसेस है जो कि कोई भी सामान्य इंटनेट कि जानकारी रखने वाला व्यक्ति कर सकता है। इसके लिए आपको निम्नलिखित प्रक्रिया अपनानी होगी-

- PFMS log in के लिये आपको सरकार कि PFMS Web Portal (Website) पर जाना होगा, उसे आपको अपने ब्राऊजर पर खोलना होगा।
- खोलने पर आपको होम पेज पर ही Know Your Payments का ऑप्शन दिखाई पड़ेगा, उसे खोल देना हैं।
- यहा आपको सारी जानकारी यानी नाम, पता, बैंक अकाउंट डिटेल्स यह सब बराबर भर देना हैं।
- इसके बाद आपको एक कैपचा भरना है जो जिसके बाद आपको नीचे दिये सर्च बटन पर जाना है।
- यह करने के बाद आपकी जानकारी PFMS के पास चली जायेंगी। अगर कोई भी डिटेल्स सरकार को चहिये तो यह पहले से आ जाती है क्योंकि Aadhar Card से Pan Card link और Pan से Bank Account link किया हुआ होता है।

जल्दी से जल्दी अपने संकुल में इस सिस्टम को समझ लेवें ताकि आपके स्कूल को मिलने वाले समस्त ग्रांट का बेहतर उपयोग जल्दी से जल्दी आप कर सकें।